समकालीन बोध और धूमिल के काव्य में मूल्य चेतना

डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा

जब भी समकालीन कविता की चर्चा होती है, तो समकालीन बोधों का उल्लेख प्रायः सभी समीक्षक करते प्रतीत होते हैं। इसी के नामोल्लेख से वे कार्यसंपन्नता समझ लेते हैं। वस्तुतः 'समकालीन बोध' के संबंध में कोई एक निश्चित धारणा नहीं है। इसमें समकालीन बोध के संबंध में विचार प्रस्तुत करने से पूर्व 'बोध' शब्द का स्पष्टीकरण करना उचित होगा, क्योंकि 'समकालीन' की चर्चा कविता के संदर्भ में भी है। समीक्षा में इस शब्द का समारम्भ प्रायः 'आधुनिकता' के प्रचलन से माना जाता है। इस प्रकार बोध से संयुक्त अनेक धारणाएँ प्रचलित हैं – इसमें विविधता एवं व्यापकता की धारणा स्पष्ट है। यथा युग-बोध, भाव-बोध, आधुनिक भाव-बोध, आधुनिकता-बोध, अर्थ-बोध, संशय-बोध, संत्रास-बोध, व्यंग्य-बोध, मूल्य-बोध इत्यादि कुछ अधिक प्रचलित रूप हैं। इसमें 'बोध' शब्द का प्रयोग एक ही अर्थ में नहीं किया गया है। 'युग-बोध' से अभिप्राय स्थिति से है जबकि 'भाव-बोध' में ज्ञान का संवेदनात्मक स्तर माना जा सकता है (हालांकि हम इस नाम से सहमत नहीं हैं) आधुनिकता-बोध में भी बोध का प्रयोग निश्चित मान्यताओं अथवा प्रक्रिया के लिए हुआ है। 'अर्थ-बोध' में इसका प्रयोग स्थिति एवं परिचय की सीमा को व्यक्त करता है। शेष सभी में बोध का प्रयोग समकालीन बोध के रूप में हुआ है – इसमें सभी स्थितियों के साथ बोध लगाया जाता है – विसंगति, मृत्यु, अस्तित्व, क्षण, व्यर्थता, काल इत्यादि कुछ शब्द उल्लेख्य हैं। अतः स्पष्ट है कि सभी में प्रयुक्त शब्द 'बोध' का अभिप्राय एक नहीं हो सकता। कहीं इससे मात्र विचार, धारणा, मान्यता, संकल्प, दृष्टि, चेतना इत्यादि की स्थिति मानी जा सकती हैं पर 'बोध' इस सबसे व्यापक एवं सार्थक शब्द-प्रयोग है। इस शब्द के लिए अंग्रेजी में पर्यायवाची शब्द ढूँढ़ना व्यर्थ होगा। क्योंकि इसे न तो 'कन्सेप्ट' कहा जा सकता है क्योंकि इससे इसे 'धारणा' तक सीमित करना होगा। इसकी पुष्टि हम पी.एल. हीथ (P.L. Heath) के कन्सेप्ट के स्पष्टीकरण से कर सकते हैं जिसमें लेखक ने इसमें अनिवार्यतः नकली अभिव्यक्ति अथवा परिवर्तनशील स्थिति में अर्थ की सार्थकता का पता 'सिद्धांत के कथ्य' से लगाया जाना माना है। एक बार स्पष्टीकरण के पश्चात यह क्रम चलता रहता है। प्लेटो 'विचार' के संदर्भ में इसकी स्थिति मानते हैं जब कि "दर्शन के क्षेत्र में कन्सेप्ट को विचार की स्थिति से भिन्न ज्ञानेन्द्रिय (सेंस) से संबंधित माना जाता है। इसे कुछ लोग अवेअरनेस, इनस्टिंक्ट (बोध तथा बुद्धि) से जोड़ते हैं।"[1]

अधिकांशतः हिंदी में इस शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में हो रहा है। डॉ. कामिल बुल्के ने "'बोध' का अर्थ – (sense, awareness and instinct) सेंस, अवेअरनेस, इन्स्टिंक्ट के रूप में किया है, जबकि कन्सेप्ट का अर्थ उन्होंने धारणा, विचार से लिया है।"[2] भगवतीचरण वर्मा ने "चिंतन, विचार और बोध की चर्चा में 'इन्सिंटक्ट' के लिए 'अन्तर्बोध' का प्रयोग किया है। वे साहित्य में विवेक तथा भावना का एकीकरण प्रतिष्ठित करते हैं।"[3] डॉ. जयनाथ नलिन ने 'बोध' की चर्चा सविस्तार की है। लेखक के अनुसार – "इन्द्रियों द्वारा विषय के ग्रहण को बोध कहते हैं। इन्द्रियों, मन, बुद्धि और हृदय द्वारा गृहीत या ग्राह्य पदार्थ विषय है। विषय के ग्रहण की क्रिया, प्रक्रिया, प्रतिक्रिया, विषय-विश्लेषण, समता-विषमता की परख

और खोज, मूल्य और महत्व, मानवीकरण, ग्रहण और त्याग का निर्णय सभी बोध के अंतर्गत आते हैं। स्मृति, अनुमान, कल्पना, चिंतन, प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुभूति सभी बोध के रूप हैं। सामान्य रूप से यों समझिए : किसी पदार्थ के स्वरूप को मन में बैठाना और इंद्रियों द्वारा अनुभव करना बोध कहलाता है।"[4] डॉ. नलिन ने बोध को व्यापक अर्थों में प्रस्तुत करना चाहा है, परंतु इसे जब युग, अर्थ, समकालीन अथवा आधुनिकता के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है तब इसे परिभाषा तक सीमित नहीं किया जा सकता। सचमुच इसमें चेतना, संकल्प, स्थिति की विशेषता रहती है।" बोध को आधुनिकता के साथ प्रयुक्त करते समय डॉ. रमेश कुन्तल मेघ ने इसे सेंस के पर्याय रूप में माना है। "बोध का संबंध विमर्श शक्ति से है जो विवेक तथा बुद्धि से नियत है।" बोध का बोधकता के परस्पर रूप को स्पष्ट करते हुए लेखक ने संवेदना, संवेगों के संदर्भ में स्वीकार किया है कि बोधकता "बोध की वासनोद्भूत भावदशा है जबकि बोध चिदात्मक है। बोध का बुद्धिसंस्कारित स्वरूप ही उदात्त (सब्लाइम) का उन्मेष करता है। अतः बोध से ऊपर उदात्त है तथा नीचे बोधकता और भावुकता है।"[5]

वस्तुतः बोध को समझाते समय लेखकों के सम्मुख अनेक प्रकार की दृष्टियों, विचारधाराओं, अवधारणाओं के प्रति आग्रह रहा है। शिव के संबंध में बोध तथा बुद्ध का बोधि (बोध) भिन्न संदर्भ की व्यंजना करते हैं। यह सही है कि बोध में ज्ञान, विवेक, बुद्धि तथा चिंतन रहता है पर इसे संवेदनात्मक धरातल पर देखा जा सकता है। बोध को इन्द्रियानुभूति के माध्यम से किसी वस्तु (आब्जेक्ट) की स्थिति का परिज्ञान कराना तथा काल-सापेक्ष मानना आधुनिक या आधुनिकता की चर्चा में संगत माना जा सकता है पर इसी में इस शब्द की सीमा नहीं माननी चाहिए। आवश्यकता है कि इस बोध शब्द को 'बोधि' से मिलाया जाना चाहिए और उस व्यापक संदर्भ को आधार में रखते हुए इसकी विविधता का परिचय प्राप्त किया जाना चाहिए। मात्र विवेक, विचार, धारणा अथवा कालगत चेतना बोध की परिणति नहीं है – इसके विविध आयाम माने जा सकते हैं। इन्द्रियानुभूति को जिस प्रकार किसी एक विषय अथवा काल की सीमा में आबद्ध कर पाना असंभव है इसी प्रकार 'बोध' बहुआयामी एवं विविध प्रयोगधर्मी शब्द है। समकालीन बोध में इसको काल-सापेक्ष देखा जा सकता है पर जब इसका प्रयोग अस्तित्व, संगति, विसंगति, संत्रास, संशय, व्यंग्य एवं मूल्य के साथ किया जाता है तो इसका अभिप्राय कुछ अंशों तक सीमित हो जाता है। उदाहरणार्थ 'समकालीन बोध' से अभिप्राय युगीन स्थितियों, मान्यताओं एवं विशिष्टताओं से है जिसमें असहमति, विरोध, विद्रोह तथा क्रांति के साथ अनास्था, अविश्वास, अमर्यादा, संशय, संत्रास, ऊब, निराशा, व्यर्थता, विद्रूपता एवं विसंगति का बोध स्पष्ट है। युगीन परिवेश की व्यंजना इन बोधों के द्वारा हुई है। युग के अंधेपन की व्याप्ति स्पष्ट है पर समकालीन बोध में राजनीति के प्रति जागरूकता का भाव भी आया है – इसलिए समकालीन कविता में उपर्युक्त स्थितियों के यथार्थ चित्रण के साथ राजनीतिक बोध (चेतना) की सही पहचान का प्रयास भी किया गया है।

धूमिल की कविताओं का अनेक दृष्टियों से विश्लेषण करना चाहा है। इसमें 'बोध' शब्द को व्यापक रूप में ग्रहण किया गया है। समकालीन बोध के साथ मूल्य-बोध, समस्या-बोध, संशय-बोध, संत्रास-बोध, व्यंग्य-बोध एवं इतिहास-बोध की चर्चा सैद्धांतिक रूप में करते हुए धूमिल की कविताओं में इन स्थितियों का दिग्दर्शन कराने का प्रयत्न किया गया है।

धूमिल के काव्य में मूल्य-चेतना :

कैसा भी काव्य हो सभी में शब्दों, प्रतीकों एवं बिंबों के माध्यम से मूल्यों के प्रति कवि की प्रतिबद्धता का परिचय मिलता है। धूमिल एक ऐसे ही कवि हैं जिसका प्रत्येक वक्तव्य सार्थक है। इसलिए कवि प्रत्येक कविता में किसी-न-किसी समस्या अथवा मूल्य-चेतना को प्रस्तुत अवश्य करता है। इसके लिए वह ऐसे शब्द-संकेतों की योजना करता है, जिनसे उसकी ऐतिहासिक समझ एवं मूल्य-प्रतिबद्धता की पुष्टि सहज रूप में हो जानी चाहिए। यथा – कबूतर (पंचशील), ताशकंद (शास्त्री-संदर्भ), लोहा (कठोरता, दृढ़ता), आँसू-हाय (विवशता), आग (क्रांति-आक्रोश)। वास्तव में धूमिल की मूल्य-प्रतिबद्धता उसकी 'तलाश' में स्पष्ट होती है – गतिशीलता इसका आधार है। कहीं भी पूर्ण उपलब्धि की बात कवि नहीं करता, निरंतर प्रजातंत्र के माध्यम से सही राजनीतिक दृष्टि का परिचय देता है। कवि की विशेषता इस बात में है कि वह एक

साथ सभी मूल्यों को मानवीय, सामाजिक एवं राजनीतिक धरातल पर व्यंजित करता हुआ भाषा, व्याकरण, वाक्य, वक्तव्य, शब्दों, प्रतीकों, बिंबों एवं सपाटबयानी तक की समकालीन समस्याओं को प्रस्तुत करता है। इसलिए धूमिल की मूल्य-प्रतिबद्धता बहुआयामी एवं संश्लिष्ट है। यथार्थ (वास्तव), सही-सार्थक एवं सपाटबयानी का कवि मूल्यों की स्थूल अभिव्यक्ति एवं अन्वेषण का विरोधी है।

यही कारण है कि इनके दोनों काव्य-संग्रहों एवं स्फुट रूप में प्रकाशित कविताओं के माध्यम (आलोचना, अंक-33 तथा आवेश 1977) से धूमिल ने अनेक समस्याओं को प्रस्तुत करना चाहा है। व्यक्ति, परिवार, जाति, वर्ग, राष्ट्र तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वह समस्याओं एवं महत्वपूर्ण घटनाओं के आधार पर मूल्यों की स्थिति को रूबरू किया है। समकालीन संदर्भ में कवि ने 'विरोध' एवं 'असहमति' को सही अर्थ में समझने-समझाने का प्रयास किया है, इसे वह इस रूप में प्रस्तुत करते हैं – *"सहमति.....?/नहीं, यह समकालीन शब्द नहीं है/ इसे बालिगों के बीच चालू मत करो।"*[6]

कवि की मूल्य-प्रतिबद्धता जहाँ उसके समकालीन होने की स्थिति में है वहाँ वह सही आदमी की पहचान एवं तलाश करता है। वह कहता है – *"शब्द किस तरह/कविता बनते हैं/इसे देखो/अक्षरों के बीच घिरे हुए/आदमी को पढ़ो/क्या तुमने सुना कि यह/लोहे की आवाज है या/मिट्टी में गिरे हुए खून/का रंग।"*[7]

धूमिल की अधिकांश कविताएँ समस्याओं का लेखा-जोखा है। इनमें उसकी दृष्टि सदैव वर्तमान मूल्यहीनता की स्थिति पर रही है। वही सदाचार, प्रेम, सद्भाव एवं अहिंसा सरीखे मूल्य आज उनकी दृष्टि में समाप्त हो चुके हैं। चारों ओर स्वार्थान्धता है, उत्सर्ग एवं आत्मीयता के साथ मर्यादा के अभाव में मूल्यों की अविस्थिति भला किस रूप में मानी जा सकती है? इसे कवि 'पटकथा' एवं अन्य अनेक कविताओं में प्रस्तुत कर मूल्यहीनता की स्थिति का संकेत करते प्रतीत होते हैं – *"मैंने अहिंसा को/एक सत्तारूढ़ शब्द का गला काटते हुए देखा/मैंने ईमानदारी को अपनी चोरजेबें/भरते हुए देखा/मैंने विवेक को/चापलूसों के तलवे चाटते हुए देखा.....!"*[8]

कवि विरोधी, विपरीत अथवा प्रतिकूल स्थितियों के प्रकाशन से वह सही और सार्थकता की तलाश करता है। यही कारण है वह ऐसे पात्रों, संदर्भों को लेता है जिनसे युग-बोध की वास्तविकता का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। "'मोची-राम' कविता निम्न वर्ग-चेतना की अनुपम कसौटी है।"[9] जूते की नाप से धूमिल ने आदमी की पहचान करने का प्रयास किया है।

"धूमिल को सही अर्थों में मानें तो वे 'समस्या के कवि' हैं।"[10] देश की प्रत्येक समस्या को उन्होंने अनुभव करने का प्रयास किया है – कुछ से उसे स्वयं गुजरना भी पड़ा है। ('आलोचना' में प्रकाशित धूमिल के पत्र) अपने आस-पास की दैनिक स्थितियों एवं समस्याओं के प्रति वह सदैव जागरूक रहे हैं। "'कविता' शीर्षक में यदि एक संपूर्ण स्त्री होने की समस्या है जो कि 'लड़की' से 'धर्मशाला' बन चुकी है तो 'पतझड़' कविता में धूमिल ने बेकारी समस्या पर गहरा आघात किया है। देश-प्रेम की वास्तविकता धूमिल ने जानी है तभी तो कहते हैं कि आदमी का भ्रम और देश-प्रेम जैसी बेकारी की फटी हुई जेब से खिसककर बीते हुए कल में गिर पड़ता है। भूखा-बेकार व्यक्ति शैतान तो बन सकता है – विद्रोही और बागी भी बन सकता है पर उसमें देश-प्रेम किस स्तर का होगा यह विचारणीय है। कवि धूमिल नवयुवकों को रोजगार दफ्तर से निकलते देखते हैं तथा वे कहते सुनाई पड़ते हैं – इस देश की मिट्टी में/अपनी जांघ का सुख तलाशना/अंधी लड़की की आँखों में/उससे सहवास का सुख तलाशना है।"[11]

उनकी 'पटकथा' तो सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का काव्यात्मक लेखा-जोखा है। कवि की समस्या यह है कि सबकुछ अस्त-व्यस्त होते हुए भी 'सामान्य' चल रहा है – "कहीं कोई हलचल नहीं, कोई परिवर्तन नहीं/देश-भक्ति, समाजवाद, शांति के अर्थ ही बच रहे हैं – कार्यान्विति एवं व्यवहार में सबकुछ विपरीत है। 'व्यवस्था' के प्रति उसका रोष कुछ तीखा है। *"मैं रोज देखता हूँ कि व्यवस्था की मशीन का/एक पुर्जा गर्म होकर अलग छिटक गया है/और ठंडा होते ही*

फिर कुर्सी से चिपक गया है। उसमें न हया है न दया है.....मैंने हरेक को आवाज दी है/हरेक का दरवाजा खटखटाया है। मगर बेकार मैंने जिसकी पूँछ/उठाई है उसको मादा/पाया है/वे सबके सब तिजोरियों के दुभाषिए हैं।'[12] रचना के अंत में धूमिल की मानसिक खिन्नता, घृणा तथा संशय का चरम है। वह देश की समस्याओं से स्वयं को घिरा पाता है। तभी सोचता है, *"मेरे सामने वही चिर परिचित अंधकार है/संशय अनिश्चयग्रस्त ठण्डी मुद्राएँ हैं/हर तरफ/शब्दावली शब्दबेधी सन्नाटा है/दरिद्र की व्यथा/की तरह/उचाट और कूँधता हुआ/घृणा में डूबा हुआ सारा का सारा देश/पहले की ही तरह आज भी/मेरा कारागार है।'*[13]

समाज में नारी के शोषण पर 'यौन-समस्या' जैसी धूमिल ने कविताओं में नये ढंग से समस्या को प्रस्तुत किया है। वह किसी प्रकार का प्रणय-प्रसंग नहीं उभारता और न ही नारी के रूप-अंगों के उभार से मांस सौंदर्य को व्यंजित करता है वरन् यौन का चित्रण इनमें विवशता के रूप में जरूर आता है – उसमें अबोधता का भाव हो सकता है जैसा कि 'लड़की' से 'धर्मशाला' की चर्चा में स्पष्ट है। इसी प्रकार धूमिल ने अनेक ऐसे वक्तव्य दिए हैं जो कि देश में फैली दुष्प्रवृत्तियों का पर्दाफाश करते हैं। मूलतः सही अर्थों में कोई मूल्यान्वेषी कवि ही ऐसा कर सकता है। मर्यादा, शालीनता इनकी रचनाओं का आधार है। वह एक ऐसा संगठन अवश्य चाहते हैं जो परिवर्तन सही अर्थों में कर सके – इसीलिए विद्रोह और क्रांति को मूल्य-प्रतिबद्धता के अर्थ में स्वीकारते हैं; धूमिल की काव्य-चेतना एवं उसके मूल्य-संकलन को निम्न पंक्तियों में 'मूल-मंत्र' अथवा केंद्र रूप में माना जा सकता है। *"मेरी कविता इस तरह अकेले को/सामूहिकता देती है और समूह को साहसिकता।*

इस तरह कविता में शब्दों के ज़रिए एक कवि/अपने वर्ग के आदमी को साहसिकता से/भरता है जबकि शस्त्र अपने वर्ग-शत्रु को/समूह से विच्छिन्न करता है।'[14]

"कवि का संशय देश की वर्तमान स्थिति को लेकर अनेक कविताओं में द्रष्टव्य है। अनेक कविताओं में सीधा वह जनतंत्र की चर्चा करते हुए जहाँ विभिन्न समस्याओं से परिचित कराता है, वहीं उसे एक दूसरे जनतंत्र की तलाश होती है। संशय में तलाश जारी रहती है।"[15] यही कारण है कि धूमिल कविता, भाषा, व्याकरण और शब्दों को समेटते हुए समकालीन कविता के बदलाव की सूचना देता है। कहीं सही आदमी की तलाश तो कहीं जनतंत्र की तलाश अपनी कविताओं में करना चाहते हैं। यही तलाश निरंतर जारी रहती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि धूमिल एक ऐसे समकालीन कवि है जिसने मूल्य के सभी व्यवहार पक्ष को सदैव महत्व प्रदान किया है, चाहे वह भूखे पेट की समस्या हो या व्यवसाय या सामाजिक या फिर राजनैतिक सभी समस्याओं का लेखा-जोखा धूमिल प्रस्तुत करते हैं, यही उनकी काव्योप्लब्धि एवं प्रमाणिकता है, इसलिए आज भी इनकी कविताएँ प्रासंगिक हैं, इनको जानने समझने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ :

1. P.L. Health Encyclopedia of Philosophy, Vol-2, P.0179
2. कामिल बुल्के, अंग्रेजी-हिंदी कोश, पृ.-611
3. भगवती चरण वर्मा, साहित्य के सिद्धांत तथा रूप, पृ.-58
4. जयनाथ नलिन, साहित्य का आधार दर्शन, पृ.-59
5. रमेश कुंतल मेघ, आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण पृ.-245
6. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ.-72
7. - वही –, पृ.-73
8. धूमिल, कल सुनना मुझे, पृ.-80
9. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ.-131
10. पठनीय, विविध बोध : नये हस्ताक्षर, पृ.-224
11. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ.-65
12. - वही –, पृ.-138
13. - वही –, पृ.-14
14. धूमिल, कल सुनना मुझे, पृ.-67
15. हुकुमचंद राजपाल, समकालीन बोध और धूमिल का काव्य, पृ.-88

संपर्क : डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा,
अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा-05
dr.digvijaya@gmail.com